जन आंदोलनों के साथी
स्वामी अग्निवेश नहीं रहे

स्वामी अग्निवेश जी नहीं रहे. कल शाम 11 सितंबर को उनका निधन हो गया. यह जन आंदोलनों की बड़ी क्षति है.

चाहे 70-80 के दशक में उभरे छत्तीसगढ़ में खान मजदूरों का आंदोलन हो, बंधुआ मुक्ति का आंदोलन हो, नर्मदा घाटी में चल रहा बड़े बांधों का आंदोलन हो, या किसानों का आंदोलन हो स्वामी अग्निवेश उसमें शामिल होते थे.

वे आर्य समाजी नेता थे और कर्मकांड व अंधविश्वास का विरोध करते थे लेकिन उनकी जन आंदोलन में भूमिका व समर्थन सदैव याद किया जाएगा. न्याय, समता, बराबरी और जन समर्थक भूमिका के लिए उन्हें याद किया जाएगा.

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के माध्यम से बंधुआ मजदूरों की लड़ाई के साथ, देश भर के जनसंगठनों को समर्थन व ताकत देते थे.

मैं उनसे कई बार मिला. कुछ यात्राएं भी साथ की. उनके ओजस्वी व मंत्रमुग्ध करनेवाले भाषण सुने. जनसाधारण को समझ में आनेवाली भाषा व स्थानीय मुहावरों में समां बांधने वाला भाषण देनेवाले वे अनूठे वक्ता थे.

अग्निवेश जी छत्तीसगढ़ी में भी भाषण देते थे. उनका छत्तीसगढ़ से विशेष लगाव था, वे यहां लम्बे समय तक रहे भी हैं. छत्तीसगढ़ी भाषा में धाराप्रवाह भाषण देते थे.

छत्तीसगढ़ से उनका विशेष रिश्ता था. मशहूर मजदूर नेता शंकर गुहा नियोगी व उनके संगठन छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा के आंदोलनों व कार्यक्रम में कई बार आए.

पहली 1984 में दल्ली राजहरा में शहीद वीरनारायण सिंह शहादत दिवस पर उनका भाषण सुना था. उसके बाद कई मौकों पर मिला और उनसे बात की.

शंकर गुहा नियोगी के बुलावे पर वे तत्काल आते थे. नियोगी के आंदोलनों में प्रमुखता से हिस्सा लेते थे. जब रायपुर महासमुंद जिले में मानवाधिकार कार्यकर्ता राजेंद्र सायल ने बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराने की मुहिम चलाई तब भी अग्निवेश जी ने उसका समर्थन किया और वहां आए. इससे सैकड़ों बंधुआ मजदूर मुक्त हुए. विडंबना है कि कुछ ही अंतराल में दोनों राजेंद्र सायल व स्वामी अग्निवेश चले गए.

उनके जन आंदोलन को समर्थन, व उनके जुड़ाव को, बंधुआ मुक्ति के काम को सदैव ही याद किया जाएगा.